"जो मनुष्य समय पर कार्य नहीं करता, वह अवसर खो देता है।"

"साहस और आत्मविश्वास से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं।"

छत्रपति शिवाजी महाराज – साहस, स्वाभिमान और सुशासन की प्रेरक गाथा

"स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।"
यह वाक्य बाद में लोकमान्य तिलक से जुड़ा, लेकिन स्वराज्य का सपना और उसके लिए संघर्ष सबसे पहले छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने जीवन से साकार किया।

छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म 19 फरवरी 1630 को महाराष्ट्र के Shivneri Fort में हुआ था। उनके पिता का नाम Shahaji Bhonsale और माता का नाम Jijabai था। माता जीजाबाई ने बचपन से ही उन्हें रामायण, महाभारत और महान वीरों की कहानियाँ सुनाकर देशभक्ति, न्याय और धर्म की शिक्षा दी।

बचपन से ही शिवाजी महाराज साहसी, बुद्धिमान और दूरदर्शी थे। उन्होंने कम उम्र में ही यह संकल्प लिया कि लोगों को अन्याय और अत्याचार से मुक्त कर एक स्वतंत्र राज्य – हिंदवी स्वराज्य – की स्थापना करनी है।

युवा होने पर उन्होंने अपने साथियों की छोटी-सी सेना बनाई और कई किलों पर विजय प्राप्त की। उनकी युद्ध नीति, तेज निर्णय लेने की क्षमता और जनता के प्रति प्रेम ने उन्हें एक महान शासक बना दिया। वे हमेशा महिलाओं का सम्मान करते थे और अपने सैनिकों को भी ऐसा करने की शिक्षा देते थे।

शिवाजी महाराज ने शक्तिशाली शत्रुओं का डटकर सामना किया। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी कभी हार नहीं मानी। उनका जीवन हमें सिखाता है कि साहस, आत्मविश्वास और सही योजना से बड़ी से बड़ी चुनौती को भी जीता जा सकता है।

सन् 1674 में रायगढ़ किले में उनका राज्याभिषेक हुआ और वे छत्रपति शिवाजी महाराज बने। उन्होंने अपने राज्य में न्याय, सुशासन और जनता की सुरक्षा को सर्वोच्च महत्व दिया। उनके शासन में सभी धर्मों और समुदायों के लोगों को समान सम्मान दिया जाता था।

छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रेरणादायक विचार•

• "स्वतंत्रता सबसे बड़ा धन है, इसकी रक्षा के लिए हर संघर्ष छोटा है।"

• "किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति उसके जागरूक और साहसी लोग होते हैं।"

उनके निधन के बाद भी उनके विचार, साहस और स्वराज्य का सपना जीवित रहा। उनके द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य आगे चलकर भारत की एक बड़ी शक्ति बना।

हमें क्या सीख मिलती है?

✓ बड़े सपने देखने का साहस रखें।
✓ अन्याय के सामने कभी न झुकें।
✓ आत्मविश्वास और सही योजना से सफलता मिलती है।
✓ एक सच्चा नेता वही है जो अपनी जनता की भलाई को सबसे ऊपर रखे।

छत्रपति शिवाजी महाराज केवल एक महान योद्धा नहीं थे, बल्कि साहस, नेतृत्व, स्वाभिमान और सुशासन के ऐसे आदर्श हैं, जो आज भी करोड़ों लोगों को प्रेरणा देते हैं।